Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Vol - VI Issue - II FEBRUARY 2019 Peer Review e-Journal Impact Factor 5.707 ISSN 2349-638x

आर्थिक दरिद्रता का भयावह चित्रण ''जंगल जहाँ शुरू होता है उपन्यास''

डॉ. संतोषकुमार लक्ष्मण यशवंतकर
महिला महाविद्यालय, गेवराई
त.गेवराई जि. बीड महाराष्ट्र

मनुष्य युगों युगों से अपना जीवन सुखकर बनाने के लिए प्रयत्नशील रहा है। प्रतिकूल परिस्थिति एवं परिवेश से संघर्ष करने की प्रेरणा उसे जन्मत:प्रकृति से अनायास ही प्राप्त हुई है जिसके बल पर मनुष्य ने आज अनेक सुख–सुविधाओं को जोड लिया है। आज जिसके पास जितनी अधिक सुख–सुविधाएँ एवं भौतिक संसाधनों की उपलब्धता है उसे समाज में उतना ही अधिक मान–सम्मान मिल रहा है। फिर चाहे वह किसी भी जाती और धर्म का क्यों न हो। इस कारण समाज में आज अधिकाधिक धन प्राप्त करने की लालसा निर्माण हो गई है। परिणामत: आज हर व्यक्ति वैध्य–अवैध्य संपत्ति अर्जित करने लगा है। इस धनलिप्सा ने आज हमारे सामने अनेक समस्याँ खडी की हैं। जिसमें गरीबी, बेकारी, भूख, शोषण, भ्रष्टाचार, पीछडापन, आर्थिक विषमता आदि ने विकराल रूप धारण किया है। अत: आज अर्थ ने संपूर्ण मानवी जीवन को अत्याधिक प्रभावित किया है।

आदिवासियों के विकास के लिए बनाई गई कोई भी योजना पूँजीपति, साहूकार, ठेकेदार, दलाल, सूदखोर इनके पास पहुँचने से पहले हडप लेते है। परिणाम स्वरूप इनके जीवन में कोई भी परिवर्तन न होकर आज के विज्ञान युग में भी वे आदिम जीवन जीने के लिए बेबस है। इसका बेबाक चित्रण संजीव ने अपने उपन्यासों में किया है। जंगल जहाँ शुरू होता है इस उपन्यास में आदिवासियों के आर्थिक बरबरता का चित्रण बेडे यथार्थ ढंग से हुआ है।

विवेच्य उपन्यास में मिनी चंब के थारूओं के इलाके में भी दरिद्रता का आलम छाया हुआ है। कुमार यहाँ के थारूओं के आर्थिक जर्जरता को देखकर कहता है—आबादी की सघनता धीरे–धीरे कम होती गई। सिर्फ फूस के घरोंदे या खपरैल,

ओ भी दूर–दूर। दूर से झाँकते स्त्री–पुरूष, बच्चे जीप के पास आते ही कछुए की तरह गर्दन घुसेड लेते लुंगी, गमछे, धोती, भगवे में लोग देश के आम गाँवों से ज्यादा दरिद्र, ज्यादा बीमार, ज्यादा निरिह। १ आदिवासी लोग आज भी पशु जैसा अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए बाध्य है। जो रोटी कपडा और मकान जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए तरसते, तडपते है।

आदिवासियों की आर्थिक दुर्बलता का एक ओर कारण यह है कि उनके हाथों को काम नहीं है। जिसके चलते उन्हे बेकारी जैसी भयावह समस्या से रू–ब–रू होना पड रहा है। काम के लिए दर–दर भटकना पडता है। विवेच्य उपन्यास में आदिवासी बिसराम और काली में काम करने की क्षमता है फिर भी उन्हें रोजी नहीं मिलती। जमींदार चंद्रदीप सिंह उनकी जमींन, गाय, भैंस हडपकर मजदूर बनाते है। परिणामस्वरूप उन्हें रोजी–रोटी के लिए दर–दर घूमना पडता है। बिसराम अपनी व्यथा को व्यक्त करता है—''पहले चीनी मिलें बंद हुई फिर खेत बंधक हुए, भैंस गई, मेहरारू मरन सेज पर और बेटी को साँप ने डँसा। २ काली अपने परिवार का चलाने के लिए कुछ भी काम करने के लिए तैयार है पर ठेकेदार के नहर पर महिना भर काम करता है, पैसे माँगने पर पीटा जाता है। आखिर में बेकारी से तंग आकर वह सुलेमान के घर पर बिगार करने के लिए भी बेबस हो जाता है। जिसमें एक माह के काम के केवल बीस रूपये मिलते है।

बेकारी के कारण उन्हें फिर ऋणग्रस्तता का सामना करना पडता हैं। आदिवासियों के अपने सिर पर ऋण लेकर जन्म लेता है, ऋण के बोझ से ही

Professor
J.B.S.P. Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Tq.Georai, Dis

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Vol - VI Issue - II FEBRUARY 2019 Peer Review e-Journal Impact Factor 5.707 ISSN 2349-638x

मरता है और अपनी संतानों को भी विरासत में ऋण देकर मरता है। जमींदार, पूँजीपति, पुलिस और डाकू के जानलेवा शोषण, अकाल, प्राकृतिक अपदा, अत्याधिक बेकारी और सरकारी साहयता का अभाव, अशिक्षा के कारण आदिवासियों को अपने पर्व, त्योहार, मनाते तथा धान, बीज खरीदने के लिए साहूकारों, ठेकेदारों के पास से अपनी जमींन, घर, पशु गिरवी रखकर ऋण लेने के लिए विवश होना पडता हैं। विवेच्य उपन्यास में धानकटी के मौसम में मेले में जाकर शराब पीकर मौज मनानेवाले थारूओं को देखकर मलारी कहती है–''जाओ! इस नाच–तमाशा और पहुनाई में वैशाख तक आते–आते सब धान लुटवाकर फिर करज लो या मजूरी के लिए गिडगिडाओं।''३ विवेच्य उपन्यास में थारू जमींदार, पुलिस, डाकूओं के शोषण और आंतक से पीडित होकर अपना घर–व्दार छोडकर नेपाल तथा अन्य स्थानों में भाग जाते है।

अभावग्रस्तता के कारण ही आदिवासियों को पशुत्तर जीवन जीने को मजबूर होना पड रहा है। आदिवासी समाज पैसा, रोटी, कपडा, मकान, शिक्षा, अस्पताल, बिजली के अभाव में आज भी पाषाणयुगीन जीवन जी रहा है। इस उपन्यास में बिसराम थारू का परिवार अनेक अभावों से घिरा है। पत्नी के गले में एक मात्र गहना 'हॅंसुली' को बेचकर वह बेटी का श्राध्द करता है। बीमार पत्नी के लिए पैसे के अभाव में दवा–दारू के नाम पर नीम, तुलसी, गुड का काढा पनी को देता है। उसे अपनी और परिवारवालों के पेट की चिंता हर दम खाने दौडती । अन्य चीजों के बारे में सोचना भी उसे गुन्हाह लगता है।

समाज में आर्थिक संसाधनों की असंतुलित वितरण को आर्थिक विषमता कहा जाता है। आदिवासी बसाहटों में आर्थिक विषमता बडी मात्रा मतें आज भी दृष्टिगत होती है। इस उपन्यास में मिनीचंबल में स्थित भयावह आर्थिक विषमता को देखकर कुमार कहता है–''दरिद्रता का आलम ओढे, थारूओं और धॉंगडों के गॉंव! जहॉं–तहॉं पेड और झाडियॉं, शेष सूखे की मार से कहारती धरती। इस धरती पर भी कब्जा किसका है? जबाब की तरह खडी थी गॉंव के बीच में चंद्रदीप सिंह की हवेलीनुमा बखरी। दो ट्रॅक्टर..... पंक्तिबध्द पक्की नादों की कतार, भैंसे–गायें, चार बैल पहले बैठका, मिडिल स्कूलनुमा फिर सामने दोमंजिली हवेली। ४ मिनीचंबल के इस इलाके चंद्रदीप सिंह और ललनबाबू जैसे कई जमींदार है जो यहॉं के जनसंख्या का एक प्रतिशत हैं जिनके पास इस इलाके की नब्वे प्रतिशत जमींन है और निन्यानवें प्रतिशत आदिवासी लोगों के पास केवल पॉंच प्रतिशत जमींन है। इस तरह विवेच्य उपन्यास में आदिवासियों की आर्थिक बरबरता का भयावह चित्रण संजीव ने किया है। आदिवासियों की आर्थिक विषमता और दरिद्रता का बेबाक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

संदर्भ

संजीव–''जगल जहॉं शुरू होता हैं, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं.२०००

१. संजीव–''जगल जहॉं शुरू होता हैं– पृष्ठ संख्या–१०
२. संजीव–''जगल जहॉं शुरू होता हैं– पृष्ठ संख्या–८२
३. संजीव–''जगल जहॉं शुरू होता हैं– पृष्ठ संख्या–१५५
४. संजीव–''जगल जहॉं शुरू होता हैं– पृष्ठ संख्या–५०

Professor
J.B.S.P.Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Tq.Georai, Dist. Beed